महिला सशक्तीकरण के विविध आयाम

डॉ0 उत्तरा यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
महिला पी0जी0 कॉलेज,
अमीनाबाद, लखनऊ।

मातृदेवो भवः' के अनुपम उद्घोष से अनुप्राणित हमारी भारतीय संस्कृति में स्त्रियों का अत्यन्त गौरवशाली स्थान रहा है। *'यत्र नार्यस्तु पूज्यते, रमन्ते तव देवता'* अर्थात् जिस घर में नारी का सम्मान नहीं होता, उस घर में देवता वास नहीं करते। महात्मा मनु ने उसके गौरव को बढ़ा दिया है।

"रोटी, किताब और स्त्री–जीवन के ये तीन अनमोन रत्न है। रोटी हमें जीवनदान देती है। किताबें पीढ़ियों को जोड़ती हैं। स्त्री हमारे जीवनसूत्र को बांधकर रखने में अहम भूमिका निभाती है। इनमें से किसी एक के बिना जिन्दगी बेमानी हो जाती है।"

– मिखाइल गोर्बाच्योव

"भारतीय नारी द्रोपदी जैसी हो, जिसने कभी भी किसी पुरुष से दिमागी हार नहीं खाई। नारी को गठरी के समान नहीं बनना है, उसे इतना शक्तिशाली होना चाहिए कि वक्त पर पुरुष को गठरी बनाकर अपने साथ ले चलें।"

– डॉ0 राममनोहर लोहिया

भारतीय महिलाओं की सफलता का अंतिम और आठवां मंत्र है मन और मस्तिष्क की स्वतंत्रता, जिसका स्वाद उन्होनें सदियों की दासता और सामाजिक अन्याय के बाद चखा है। यह भी एक सच्चाई है कि अभी भी बड़ी संख्या में लड़कियों और महिलाओं इससे वंचित हैं, लेकिन समय तकदीर बदलने का संकेत तो दे ही रहा है। भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और महिलाएं नए–नए अवसरों को स्वयं और परिवार के जीवन को बेहतर बनाने के लिए ही नहीं, बल्कि देश की तरक्की के लिए भी इस्तेमाल कर रही हैं। खुद ही देखिए कि इस वर्ष विश्व की सबसे शक्तिशाली महिलाओं की सूची में कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गॉधी, आईसीआईसीआई की चंदा कोचर, बायोकॉन की किरण मजूमदार शॉ, पेप्सिकों की इंद्रा नुई समेत कई भारतीय महिलाएं शामिल हैं। उम्मीद है कि नए दशक में यह सूची और लंबी होगी।

भारतीय महिलाओं ने राष्ट्र के विकास स्वतंत्रता आन्दोलन, शासन व सामाजिक अभियानों में अहम भूमिका निभायी है। रजिया सुल्तान, मीरा बाई, झांसी की रानी, एनी बेसेंट, लक्ष्मी सहगल,, विजयालक्ष्मी पंडित, कस्तूरबा गांधी, इंदिरा गांधी जैसे सैकड़ो नाम महिलाओं को मलबूती प्रदान करने में उदाहरणीय हैं, जिन्होंने भारतीय समाज को दिशा प्रदान की। इन सबके बावजूद देश की परंपराबादी सोच व सामाजिक स्थितियों ने महिलाओं को आगे आने में रूकावटें खड़ी की है। 91 प्रतिशत लघु एवं सीमान्त कृषकों, विशेषकर महिलाओं को हर दृष्टिकोण से प्राथमिकता देनी होगी। हमारी अर्थव्यवस्था में महिला कृषक की कोई पहचान नहीं है। महिलाओं का अर्थव्यवस्था में कोई योगदान नहीं स्वीकार किया गया है। महिला कृषकों के आर्थिक सुरक्षा हेतु सरकार को उसका नाम जमीन के अभिलेखों में सम्मिलित करवाना

चाहिए जिससे वे फसल बीमा और किसान क्रेडिट कार्ड की प्रत्यक्ष हकदार हो सकें।

लेकिन जैसे–जैसे महिलाओं में शिक्षा और जागरूकता बढ़ी देश में बदलाव की लहर आयी ओर वे स्वयं आगे बढ़कर महत्ती भूमिका निभाने लगीं। आज महिलाओं में जागरूकता आ रही है और उनका आत्मविश्वास बढ़ रहा है तो इसकी वजह उनका आर्थिक–सामाजिक विकास है। शिक्षा , स्वास्थ्य, पंचायत में भागीदीर, आत्मनिर्भरता, महिला आयोग सहित तरह–तरह के महिला सेलों का गठन, महिलाओं से संबंधित कानून व धाराओं का बनना व उनका पालन होना, गैरसकारी संगठनों का सक्रिय होना जैसे कारकों ने महिलाओं की बदली तस्वीर में अहम भूमिका निभायी है।

जब भारत की लोकतांत्रिक उपलब्धियों को गिना जायेगा तो पंचायती राज एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी और जब पंचायती राज की सफलता को माना जायेगा तब महिला आरक्षण और उसकी सफलता महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी। पंचायती राज के माध्यम से महिला नेतृत्व की सफलता के बारे में संयुक्त राष्ट्र की एक एजेंसी यू0एन0पी0ए0 ने अपनी ताजा रिपोर्ट में भारत की पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के आरक्षण के फलस्वरूप महिलाओं में उपजी राजनैतिक चेतना की सराहना की और कहा कि सभी राज्यों में महिलायें नये उत्साह और स्फूर्ति के साथ योगदान दे रही हैं।

वर्तमान में महिलायें अन्याय ओर अपमान के प्रति जागरूक हो गयी हैं। शिक्षा और आर्थिक आजादी के चलते आज उनके भीतर नयी चेतना जागी है।

सरकार ग्रामीण विकास के लिए अनेक कार्यक्रम गॉवों में चला रही है। सभी कार्यक्रमों का यह उद्देश्य है कि ग्रामीण समाज के सामाजिक आर्थिक ढॉचे को समय की आवश्यकतानुसार परिवर्तित किया जाय, क्योंकि सभी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का अपना महत्त्व है और सभी ने विकास कार्यों में अहम भूमिका नवाचार की है, चाहे वह सामुदायिक विकास योजना, सरकारी समितियॉ, सर्वोदय कार्यक्रम, पंचायत, भूदान आन्दोलन हो। ये सभी कार्यक्रम ग्रामीण समाज की बहुआयामी समस्याओं के समाधान हेतु कार्यरत हैं।

नारी की दशा के सुधार हेतु विभिन्न समाज सुधारकों ने सुधार का प्रयास किया। सती प्रथा का विरोध राजा राममोहन राय ने किया। राना डे ने विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया। 21वीं सदी विकास की सदी रही है। हमारे देश में र्वाधिक सुविधा सम्पन्न उच्चवर्ग है। इनमें सुप्रीम कोर्ट की महिला वकील, विदेश सेवा की महिला वकील, विदेश सेवा की महिलाकर्मी, उच्च प्रशासनिक अधिकारी, विभिन्न राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियों की सी0ई0ओ0 महिला, खिलाड़ी एवं शीर्ष नेतृत्व वाली महिलायें शामिल हैं जिन्होंने अपनी शिक्षा, सूझबूझ, परिश्रम एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण समाज में अपनी उपस्थिति से सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं।

इस वर्ग में सुप्रीम कोर्ट की वकील इन्दिरा जय सिंह, भारतीय विदेश सेवा की 1973 की टापर व देश की प्रथम विदेश सचिव निरुपमा राव, अग्नि–5 मिसाइल की परियोजना निदेशक टेसी थामस, लोकसभा की प्रथम महिला अध्यक्ष मीरा कुमार, कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गॉधी, तीन बार उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री रह चुकीं मायावती, रेलमंत्री ममता बनर्जी, भाजपा नेता सुषमा स्वराज, बैडमिंटन की भारतीय महिला खिलाड़ी साइना नेहवाल हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति द्वारा महिलाओं ने आर्थिक सशक्तिकरण के साथ ही महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता से समाज के तथाकथित सम्भ्रान्त और कुलीन वर्ग को अधिक लाभ हुआ है। इसकी महिला कर्मी सुविधा सम्पन्न समाज की संवाहिका हैं। इनमें डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर,

पत्र–पत्रिकाओं की सम्पादक, फैशन डिजाइनर, विभिन्न कम्पनियों की मैनेजर आदि महिलाएँ शामिल हैं।

डॉ0 राममनोहर लोहिया ने नागरिक अधिकारियों की बात करते हुए कहा कि समाज में स्त्री और पुरुष को बराबर का अधिकार होना चाहिए। औरत को मात्र एक गठरी के समान समझा गया, वह बेमतलब हो गयी। समाज में कुछ करने के बजाय वह बोझ बन गयी।

देश व समाज के समुचित विकास हेतु प्रेम, एकता, सहयोग एवं सद्भाव के साथ नर–नारी की बराबरी अत्यन्त आवश्यक है। समाज में आज भी नारी के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदला नहीं है। वर्तमान में नारी शक्ति को सर्वोपरि मानते हुए नारी के भीतर छिपी हुई प्रतिभा का सदुपयोग हो। नारी के साथ गैर–बराबरी का व्यवहार न करके उसकी निपुणता का लाभ ले, जिससे कि वे अच्छे कार्य करने की साहस जुटा सकें। हर हाल में महिलाओं की सहभागिता को बढ़ाना है। महिलायें जो कि घर, परिवार, समाज व देश के परिवर्तन का मुख्य स्तम्भ है, को और अधिक सुदृढ़ करने की जरूरत है।

पुरुष यदि अपनी कर्मठता से देश के वाह्य रूप को सँवारता है तो नारी अपनी भावनात्मक श्रेष्ठता से उसके आत्मिक और आध्यात्मिक स्वरूप को सजाती है। नारी को प्रकृति प्रदत्त सर्वोत्तम गुण प्राप्त हैं, उनसे वे सहज ही आन्तरिक और वाह्य व्यक्तित्व को सँवार सकती है। कुछ वर्ग विशेष की महिलायें अवसर का लाभ उठाने में अवश्य सफल रही हैं परन्तु पिछड़े समाज की महिलाएँ आज भी पीछे रह गयी हैं। देश और सामाजिक तथा राजनैतिक विकास के लिए सभी वर्ग की महिलाओं के मन से पुरातन विचार समाप्त करने होंगे। अंधविश्वास, अज्ञानता, असमानता एवं नर–नारी गैर–बराबरी के प्रति सोच बदलनी होगी, तभी संतुलित विकास होगा और समाज का विकास होगा। जिस देश एवं समाज में नारी की स्थिति महत्त्वपूर्ण, सुदृढ़, सम्मानजनक एवं सक्रिय होगी, उतना ही वह देश एवं समाज उन्नति, समृद्ध एवं मजबूत होगा।

सन्दर्भ सूची

1. भारत में ग्रामीण विकास–2009, विवेक प्रकाशन, डॉ0 अमित अग्रवाल
2. विकास का समाजशास्त्र – डॉ0 एस0सी0 दुबे
3. इक्कीसवीं सदी का भारत– मुद्दे एवं नीतियाँ 2009, ओमेगा पब्लिकेशन, डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव
4. भारतीय अर्थव्यवस्था, साहित्य भवन पब्लिकेशन, रुद्रददत्त
5. कृषि सेवा सन्देश, 2008
6. कृषि सेवा सन्देश, 2010, कृषि भवन, लखनऊ, उ0प्र0
7. प्रतियोगिता दर्पण, माह अगस्त 2010
8. प्रतियोगिता दर्पण, भारतीय अर्थव्यवस्था, अतिरिक्तांक 2010
9. कुरुक्षेत्र, माह अगस्त
10. लखनऊ मैनेजमेंट एसोसिएशन, वर्कशाप, जुलाई 6, 2010, ई–चौपाल (किसानों के हित में किसानों का अपना)
11- Manual for Form Woman to reduce pesticidal hazards published by the Director, NRCWA.
12. कृषि महिलायें एवं वानस्पतिक पीडक नारी एक मार्गदर्शिका, प्रकाशक, निदेशक NRCWA.

13- Eco Friendly Pest Management practices for Cabbage, tomato and brinjal, published by NRCWA.

14. केचुंआ खाद उत्पादन एक मार्गदर्शिका, प्रकाशक/निदेशक, NRCWA.

15- Gender Sensitive approaches for Mushroom Cultivation, published by Director NRCWA.

16- Strategy for Gender Sensitive Extension in Agriculture and Allied field, published by Director, NRCWA.

17. भारतमाता–धरती माता, डॉ0 राममनोहर लोहिया, सम्पादक ओंकार शरद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली, पटना

18. भारत के शासक, धरती माता, डॉ0 राममनोहर लोहिया, सम्पादक ओंकार शरद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली, पटना

19. समता और सम्पन्नता, धरती माता, डॉ0 राममनोहर लोहिया, सम्पादक ओंकार शरद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली, पटना

20. लोहिया के विचार, धरती माता, डॉ0 राममनोहर लोहिया, सम्पादक ओंकार शरद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली, पटना

21. योग सन्देश, नारी व आन्दोलन विशेषॉक, मई 2012

22- Manual for Form Woman to reduce pesticidal hazards published by the Director, NRCWA.

23. कृषि महिलायें एवं वानस्पतिक पीडक नारी एक मार्गदर्शिका, प्रकाशक, निदेशक NRCWA.

24. कुरुक्षेत्र, माह अगस्त

25. कृषि सेवा सन्देश, 2008

26. कृषि सेवा सन्देश, 2010, कृषि भवन, लखनऊ, उ0प्र0

27. जनसंदेश टाइम्स दि0 09.03.2013

28. राष्ट्रीय स्वरूप, 9 मार्च 2013

29. आज, 9 मार्च 2013

30. युनाइटेड भारत, 9 मार्च 2013

31. वॉयस ऑफ लखनऊ, 9 मार्च 2013

32. समय–समय पर प्रकाशित विभिन्न समाचार–पत्र